अध्याय पाँचवा

रघुवीर सिंह के भावात्मक निबन्धों की विशेषताएँ ---

अध्याय पाँचवा

रघुवीर सिंह के भावात्मक निबन्धों की विशेषतायें ---

प्रस्तावना --

डॉ.रघुवीर सिंह भावात्मक निबन्धकार के रूप में शीर्षस्थान पर रहे हैं । हिन्दी गद्य साहित्य में भावात्मक निबन्ध में इतिहास के अतीत का आधार लेकर उस इतिहास की सजगता और सजीवता अपने निबन्ध में अंकित करनेवाले एकमात्र निबंधकार के रूप में डॉ.रघुवीर सिंह का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है । उनके साहित्य की विशेषता भावुकता का प्रदर्शन रही है । उन्होंने अपने साहित्य का विषय ऐतिहासिक घटनाओं और इमारतों से संबंधित ऐतिहासिक पात्रों की मानसिक और भौतिक वातावरण तथा कथाओंपर चित्रण केन्द्रित किये हैं ।

डॉ.रघुवीर सिंह जी ने इतिहास का गहरा चिंतन और अध्ययन किया है । इसी कारण उन्होंने राजे-रजवाडों की समस्या तथा उनकी स्थिति की वास्तविकता अपने निबंध द्वारा चित्रित करने का सफल प्रयास किया है । इनके साहित्य में भावनाओं को अधिक महत्व दिया हुआ है । लेखकने ऐतिहासिक पात्रों के वैभव और पतन का चित्र अंकित करते हुओ सामान्य गरीब जनता की दयनीय स्थिति का भी अपरिचित रूप से अंकन किया है । उन्होंने भावात्मक निबंधों में आर्थिक, राजकीय तथा धार्मिक आदि स्थितियों को भी दर्शाया है । इस भावात्मक निबंध में सामान्य जनता के शोषण से उस वैभव को नियति

किस प्रकार कुचल देती है और मरणोत्तर भी वह पीडा ,वेदना उनका पीछा नहीं छोडती इसका मर्मस्पर्शी वर्णन किया है । " शेष स्मृतियाँ " में संगृहीत " उजडा स्वर्ग " और " एक स्वप्न की शेष स्मृतियाँ " अधिक महत्वपूर्ण निबंध रहे हैं । " उजडा स्वर्ग " में अंग्रेजी की दासता के मुकाबिले में भारतीय स्वातंत्र्य के प्रतीक मुगलसाम्राज्य के चिराग की ज्योति मन्द होते जाना और १८५१ की क्रान्ति में दासता से उध्दार के लिए अन्तिम मुगल सम्राट बहादूर शाह का प्रतीक के रुप में बुझाते हुए दिपक की तरह अन्तिम बार जोर से प्रज्वलित होकर बुझ जाने का बडा ही हृदयस्पर्शी वर्णन किया है ।

आप अत्यन्त संवेदनशील और प्रगतिशील विचारों के लेखक हैं ।आपने अपने साहित्य में कल्पना का सहारा लेकर ऐतिहासिक घटनाओं तथा पात्रों द्वारा जो इतिहास छुपा हुआ है उसका भावस्पर्शी वर्णन किया है । आपके साहित्य में मुगलकालीन इतिहास की घटनाओं तथा इमारतों का वैभव तथा पतन और कलापक्ष तथा भोगपक्ष की झलकियाँ दिखायी देती हैं । हिन्दी गद्य साहित्य में आप एकमात्र ऐतिहासिक भावात्मक निबंध लिखनेवालों में से हैं । आपके निबंध में मानवीय स्थिति तथा संवेदनाओं की झलक स्पष्ट दिखायी देती हैं । आपने सबसे अलग विषय का आधार लेकर उसमें सफलता पायी है । आपने भावानाओं को चित्रित करते समय इतिहास को नष्ट नहीं होने दिया ।

डॉ.रघुवीर सिंह जी के साहित्य की सबसे बडी विशेषता उनकी भाषा शैली है । चित्रात्मकता और सांकेतिकता तथा सीधे सरल शब्दों का प्रयोग आपने किया है । आपने ऐतिहासिक पात्रों द्वारा मानसिक दशाओं को मुख्य स्थान दिया है और मनुष्य के जीवन में आनेवाले उत्थान-पतन,सुखदु:ख,ऐश्वर्य विलास तथा अधिकतर भोगपक्ष का चित्रण किया है । मानवीय मन:स्थिति को मुख्य केन्द्र मानकर भावात्मक निबंधों की विशेषतायें निम्नलिखित हो सकती हैं ।

मनुष्य में स्थित अमरत्व की भावना --

`शेष स्मृतियाँ` में संग्रहीत `ताजमहल`, `एक स्वप्न की शेष स्मृति`, `अवशेष`, `तीन कब्रें`, और `उजडा स्वर्ग` आदि निबंधों में डॉ. रघुवीर जी ने मानवीय मन:स्थिति का हुबहू चित्र अंकित किया है ।

`ताजमहल`, `फतहपूर सीकरी`, `आगरे का किल्ला`, लाहौर की तीन कब्रे`, तथा `दिल्ली का किल्ला` आदि ने अमरत्व प्रदान किया है । इसी स्थान का प्रस्थापित कारण कोई न कोई ऐतिहासिक घटना रही है । `ताजमहल` इस निबंध में मानवीय संवेदनाओं की स्थिति उभरकर आयी है । मानसिक दशाओं का चित्रण तथा उमडते भावों की अनुठी व्यंजना इस लेख की मुख्य विशेषता दिखायी देती है । `ताजमहल` आज भी प्रेम के प्रतिक के रुप में खडा है । लोग इसे देखकर उस अतित दिन के गौरवगान करते है तथा उसी पर आंसू बहाकर चले जाते है । शाहजहाँ ने अपने लिये नहीं बल्कि अपनी प्रियेसी मुमताज और उनके प्रेम के लिए ताजमहल की निर्मिति की । इस जगत में मनुष्य अपने अपने कुछ शेष स्मृति - चिन्ह पिछे छोडकर चला जाता है ताकि वह अमरत्व प्रदान कर सके । `ताजमहल` शाहजहाँ और मुमताज के प्रेम की अमर देन है । फतहपूर सीकरी जो कि अकबर के स्वप्न की सुन्दर नगरी थी आज वहाँ भग्न खण्डहर शेष स्मृति के रुप में रहा है । `तिन कब्रें` इस निबंध में लेखकने जहाँगीर नुरजहाँ और अनारकली के दु:खपूर्ण प्रेम की कथा का हृदयस्पर्शी चित्रण अंकित किया है । आगरे का किल्ला अकबर का प्यारा नगर था । आगरे का किल्ला जिस नगरी में मुगल स्थापत्य कला की अदभूत वस्तु है, एतम्मद्दौला का मकबरा आज भी अपनी करुण कहानी बताता रहता है । अकबर की वह समाधी विश्वबंधुत्व की भावना जागृत करने का संदेश देती है । `दिल्ली का किल्ला` आज भी अपना इतिहास बताता है जहाँ मुगल साम्राज्य के अंतीम बादशाह बहादुरशाह का अंत दु:खपूर्ण हुआ था । मनुष्य के साथ साथ इतिहास भी अमर बनाना चाहता है ।

`अमरत्व की भावना ही मनुष्य के जीवन को सौन्दर्य तथा माधुर्य से पूर्ण बनाती है" [1]

इतिहास के अतीत घटनाओं तथा इमारतों -- का आधार --

`शेष स्मृतियाँ` इस संग्रह में संकलित सभी निबंधों का आधार ऐतिहासिक घटनाएँ, पात्र तथा भव्य भवन हैं। जिस तरह कल्पना के प्रत्यभिज्ञान स्वरूप के सत्य मुलक सजीवता का अनुभव करके संस्कृत के पुराने कवि अपने महाकाव्य और नाटक किसी इतिहास पुराण के वृत्त का आधार लेकर ही रचा करते थे।

लेखक ने `ताज` इस निबंध में मुमताज और शाहजहाँ के प्रेम के प्रतीक के रूप में खड़ा `ताजमहल` को सामने रखकर उसके अतीत की ओर जाकर ताजमहल सम्बन्धी जो इतिहास है उसे भावना और कल्पना का सत्य देकर उसे भावमयी श्रृंखला में पिरोया है। शाहजहाँ का मुमताज के प्रति प्रेम की भावना तथा मुमताज के मरणोपरांन्त शाहजहाँ के हृदय में उठी हुई निश्वासें, आहें, उदासीनता, निराशा, दर्द व्याकुलता आदि संवेदनाओं को चित्रित किया है। ताजमहल जिस दिन बन कर पूरा हो गया और शाहजहाँ बड़ी धूमधाम के साथ पहले पहल उसे देखने गया होगा वह दिन कितने महत्व का रहा होगा। पर जैसा की महाराजकुमार कहते हैं --` उस महान दिवस का वर्णन इतिहासकारों ने कहीं भी नहीं किया है। .... जिस समय शाहजहाँ ने ताज के उस अद्वितीय दरवाजे पर खड़े होकर उस समाधि को देखा होगा उस समय उसके हृदय की क्या दशा हुई होगी।` [2]

फतहपूर सीकरी जिसका अकबर ने स्वप्न देखा था। वही साम्राज्यशाली अत्यन्त सुखी संसार परंतु जहाँ सुख-समृध्दि अधिक है वहीं दर्द की चोटें अधिक दिखायी देती हैं। ऊपरी तौरपर देखनेवालों को अकबर के जीवन में शान्ति और सफलता ही दिखायी देगी परंतु भावुक रघुवीर सिंह जी की दृष्टि जब फतहपूर सीकरी के लाल-लाल पत्थरों के भीतर घूसी तब वहाँ अकबर के हृदय के टूकड़े मिले - `अपनी आशाओं और कामनाओं को निष्ठुर संसार द्वारा कुचले जाते देख अकबर रो पड़ा। उसका सजीव कोमल हृदय फटकर टुकड़े- टुकड़े हो गया। वे टुकड़े सारे

भग्न स्वप्नलोक में बिखर गये, निर्जीव होकर पथरा गये । सीकरी के लाल लाल खण्डहर अकबर के उस विशाल हृदय के रक्त से सने हुए टूकडे हैं । [3] ' आगरे का किल्ला ' इस निबंध में लेखकने अकबर का प्यारा नगर ' आगरा ' उसका वैभवपूर्ण और वैभवहीन दशाओं को चित्रित किया है । मुगल सम्राट अपने ही वैभव में लिन रहने के कारण सारा वैभव नष्ट हो गया । वैभवशाली आगरा नगर आज धूल - घूसरीत पडी है - उसका अवशेष । आगरे का लाल किल्ला का वैभवशाली वर्णन किया हुआ है। तीन कब्रें ' में सभी ऐतिहासिक पात्रों के प्रेम का दु:खपूर्ण वर्णन किया है - जिनका लक्ष्य है - अनारकली जहाँगीर और नूरजहाँ के भग्न और उजड पडे हुअे मकबरे । ' दिल्ली का किल्ला ' लेखक को उजडा हुआ स्वर्ग सा प्रतीत हुआ है । इसमें सभी पात्र अकबर, शाहजहाँ ,हुमायुँ , मुहम्मदशाह तथा औरंगजेब के जीवन के उत्थान पतन का वर्णन किया है तथा मुमताज,अनारकली के प्रेम की दु:खद कहानी को चित्रित किया है । इसमें सम्राट और उनका ऐश्वर्य विलास तथा भव्य भवन किस तरह उनका वह स्वर्ग उजड पडा तथा मुगलकालीन साम्राज्य के अंतीम सम्राट बहादुरशाह जफर के जीवन लिला की दु:खदपूर्व अंत हुआ इसका चित्रण किया है । मुगल साम्राज्य के वैभवपूर्ण और वैभवहीन मानसीक दशाओं को चित्रित करते हुअे स्वर्ग में ही नरक को चित्रित किया है । भव्य भवन , कक्षा,दीवारें, स्तंभ को सजीवता प्रदान की है । लेखकने इतिहास को काव्य का रुप दिया है ।

मानवीय संवेदनाओं की आधार --

डॉ.रघुवीर जी ने ' शेष स्मृतियाँ ' इस पुस्तक में संकलित निबंध में आदि से अंत तक मानवीय संवेदना ग्रें और दो ऐतिहासिक पात्रों को लेकर उन्होंने मानसिक दशाओं को चित्रित किया है । मनुष्य अपनी स्मृति पीछे छोडकर आनेवाले लोगों को रुलाना चाहता है । मनुष्य, मनुष्य के स्मृति को याद करके रो पडता है । आज भी वह ताजमहल, फतहपूर सीकरी, के खण्डहर,आगरा का किल्ला , दिल्ली का किल्ला और तीन कब्रें इनकी कथाओं पर अश्रुपात होता है । आज भी ईंट और पत्थर के रूप में अपनी कहानी पर अश्रु बहाते हैं । लेखकने यह

स्पष्ट किया है कि मनुष्य अपनी सुखलिप्सा को अधिक समय तक दबा नहीं सकता । उसकी सुख में तथा ऐश्वर्य विलास में रहने की लत छूट नहीं सकती वह धीरे धीरे अपने दु:ख को भूलाकर एक नया नक्शा खींचने लगता है । शाहजहाँ मुमताज मरणोपरान्त दु:खी और निराश था इसी कारण उन्हें दिल्ली उजडी सी प्रतीत हुई और उन्होंने वहाँ शाहजहाँबाद बनाकर अपने दु:खी हृदय पर विजय पायी । यह नर प्रकृति के विशेषता सामने लानेवाली शाहजहाँ की मानसिक स्थिति का वर्णन चित्रित किया है ।

जहाँगीर और नुरजहाँ द्वारा यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य किसी का प्रेम पाकर अपना जीवन पार कर सकता है । जहाँगीर को दु:खी और अकेला देखकर नुरजहाँ ने अपने पति के कर्तव्य के प्रति जहाँगीर के हृदय पर विजय पायी तो जहाँगीर फिर अपने सुख-लिप्सा तथा मादक मदिरा पीकर स्वप्न में रत हुआ तब नुरजहाँ ने जहाँगीर और उनके साम्राज्य को बचा लिया ।

मनुष्य कितने भी क्यों न ठोकर खाये परंतु सुख के पीछे दौडने की आदत को भूला नहीं सकता । थोडे से सुखप्राप्ति के लिए मनुष्य अधिक से अधिक दु:ख को सहता है ।

पलायन वृत्ति (मनोविज्ञान)

डॉ. रघुवीर सिंह का अंतीम ग्रंथ शेष स्मृतियाँ को ऐतिहासिक गद्य-काव्य कहना उचित होगा, क्योंकि गद्य-काव्य ही भावात्मक निबंध कहलायेगा । इन निबंधों में लेखकने मुगलकालीन खण्डहरों पर अश्रुपात किया है वह भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पलायन वृत्ति के भितर ही आयेगा । उन्होंने मुगलकालीन सम्राटों के ऐश्वर्य विलास तथा मुगलकालीन भव्य भवनों की साज सज्जा का बडा ही आकर्षक वर्णन किया है और उनके पतन पर अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट की है । उनका वैभव नष्ट होते देख लेखक का हृदय नश्वरता के दर्शन का विश्वासी हो

जाता है इसी कारण उनको उजड़ा हुआ स्वर्ग दिखायी देता है । एक स्थान पर वे कहते हैं -- ` उस महान किले का यह वैराग्य,उस जीवनपूर्व स्थान की यह निर्जनता,ऐश्वर्य - विलास से भरपूर सोते में यह उदासी,और उन रंगबिरंगो, चित्रित तथा सजे-सजाये महलो का यह नग्न स्वरूप -.... साधारण दर्शकों तक के हृदयों को हिला देता है, तब क्यों न वह किल्ला संन्यास ले ले । `[4] इससे एक प्रकार की घोर निराशा निर्माण होती है । समस्त निबंधों में उन्होंने संसार में अपने स्वप्नों को मूर्त रूप देने का मनुष्य का भोलापन बताया है, जो पलायन की वृत्ति का ही सूचक है । जैसे -- ` संसार को सुर-लोक बनाने और अपने स्वप्नों को यथार्थता में परिणत करने का प्रयत्न करना मनुष्य के स्वाभाविक भोलेपन का अच्छा उदाहरण है । वह मृगमरीचिका के पीछे दौडता है, किन्तु प्यास बुझना तो दूर रहा,प्यास के मारे तडप तडप कर वह मर मर जाता है । `[5]

ऐतिहासिक भावात्मक निबंध में पलायन की वृत्ति का शायद यह कारण हो सकता है कि धीरे धीरे नष्ट होती हुई प्रभुत्व कामना लेखक को मानसिक तृप्ति के लिए उकसाती है।इसके अतिरिक्त वर्तमान के प्रति असन्तोष भूत की समृध्दि में एक सन्तुलन प्राप्त कर लेता है ।

निबंध में राजकिय, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का अपरिचित रूप में चित्रण --

राजकिय --

डॉ.रघुवीर सिंह के डी.लिट.का निबंध संग्रह ` शेष स्मृतियाँ ` में संग्रहीत निबंध ` उजड़ा स्वर्ग ` सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है । क्योंकि इसमें लफजो की बदलियों की शोभा बडी ही मनोरम और उसमें १८५७ की ` कसक का मानो चाँद ` बडे ही हृदयग्राही रूप में छिपा है । इस निबंध में अंग्रेजो की दासता के मुकाबिले में भारतीय स्वातंत्र्य के प्रतीक मुगल साम्राज्य के चिराग की ज्योति मन्द होते जाना और १८५७ की क्रान्ति में दासता से उध्दार के लिए अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह का प्रतीक के रूप में बुझते हुए दिपक की तरह अन्तिम बार

जोर से प्रज्वलित होकर बुझ जाने का बडा ही हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। देशद्रोहपूर्ण सामन्ती विलासिता ही भारत के स्वातंत्र्य के नष्ट होने में प्रधान कारण हुई है। यही इसमें बडे ही मार्मिक रूप से अभिव्यक्त हुआ है। " सुख और विलासिता के मुर्दों के मांस को दु:ख तथा विवशता रूपी गीदड फाड-फाड कर नोच नोच कर खा रहे थे, उनकी सूखी हड्डियों को चबा रहे थे। राजसत्ता की कब्र को खोद-खोद कर उसमें तह तक पहुँच कर उसके निर्जीव कंकाल को बाहर खींच निकालने का प्रयत्न किया जा रहा था। उस भीषण सन्ध्या के समय राज्यश्री ने मृत्युरूपी अपनी उस भयंकर सौत को स्वर्ग में घुसते देखा, हृदय को कँपा देनेवाले अपने कंकालरूपी स्वरूप को जीवनमृत की काली साडी में लपेटे प्रेम प्रणय करने आयी थी। तब तो राज्यश्री प्रेमी का भविष्य सोचकर बेहोश पडी। और मुगलों की राज्यश्री की उस करुणापूर्ण मृत्यु पर दो आँसू बहानेवाला कोई न मिला[6]। "

अन्धा शाहआलम किस प्रकार दिल्ली की सल्तनत न सँभाल सका और बहुत दिनों तक मराठों की देखरेख में रहकर अंत में सात समुद्र पार के अँगरेजों की शरण में गया जिससे उसकी राजशक्ति उससे विमुख होकर वस्तुत: अँगरेजों के हाथ में चली गयी इसी का संकेत भी चित्रित किया गया है।

धार्मिक परिस्थिति --

शेष स्मृतियाँ " में संग्रहीत " एक स्वप्न की शेष स्मृति " में धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। जो कि धर्म के नाम पर भीषण संघर्ष होता था। रघुवीर सिंह जी ने अकबर को एक विश्वबंधुत्व तथा मानव भ्रातृत्व के विचारों का पूर्ण आगार कहा है। अकबर अपने दीवान खास में बैठकर धर्मानुयायी का कथन सुना करता था और सभी धर्मानुयायी अपने - अपने धर्म की व्याख्या करते देख अकबर को भयंकर ठेस पहुँचती थी। अकबर ने " ईश्वर एक है " इस सत्य को पाया और दीन - ए - इलाही का महान भवन निर्माण किया। विश्वबंधुत्व की भावना अकबर के स्वप्न की तरह ही रही है। आज भी एकता के नारे लगते हैं और धर्म के नाम पर संघर्ष होता ही है। अकबर ने विश्वबंधुत्व

का संदेश केई साढे तीन सौ वर्ष पहले दिया था और वह मकबरा जिसमें अकबर ने समाधि ली थी आज भी वह संदेश देती है। परंतु आज भी भारत उसी आदर्श को प्राप्त नहीं कर सका । मध्यकालीन युग की धार्मिक दशाओं पर विचार प्रकट किया है । धार्मिक पाखण्डों और मतमतांन्तरों के कारण उत्पन्न विषमता पर प्रकाश डालते हुये देश के अध:पतन का चित्र प्रस्तुत किया है ।

आर्थिक परिस्थिति --

डॉ. रघुवीर सिंह जी ने जिस तरह साम्राज्य का वैभव विलास और पतन का चित्र खींचा है और तज्जनित दार्शनिक उद्गारों को प्रकट किया है उसी तरह लाखों करोडों गरीब सामान्य जनता की ओर भी ध्यान दिया है । जिसके रक्त मांस के नींव पर साम्राज्य का वैभव खडा हुआ है । जिनकी भावनाएँ तथा हृदय कुचल दिया था । धनिष्ठों तथा शासकों के विलासिता की कामनाएँ पूर्ण करने के लिए, जिस साम्राज्य के वैभव को पूर्ण करने के लिए अनेक. गरीबों पर अत्याचार किये । दरिद्रों और पीडितों को कुचलाकर दिये वही उसी पाप की प्रायश्चित भोग रहे है। वहीं भव्य भवनों के ईंट और पत्थर अपने अतीत तथा शासकों के पाप को याद करके रो पडते हैं । `वैभव से विहीन सीकरी के वे सुन्दर आश्चर्यजनक खण्डहर मनुष्य की विलास वासना और वैभव लिप्सा को देखकर आज भी बीभत्स अट्टहास करते हैं । अपनी दशा को देख कर सुध आती है उन्हें उन करोडों मनुष्यों की, जिनका हृदय, भावनाएँ, शासकों धनिको तथा विलासियों की कामनाएँ पूर्ण करने के लिए निर्दयता के साथ कुचली गयी थी । आज भी उन भव्य खण्डहरो में उन पीडितों का क्रन्दन सुनाई देता है ।`[7] इसमें वर्णित जो परिस्थितियाँ है जैसे की आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित `प्रवेशिका` में कहते है कि `प्रस्तुत पुस्तक में अध्यवसान पध्दति पर बहुत जगह घटनाओं की ओर भी संकेत है, जिन्हें इतिहास के ब्योरो से अपरिचित जल्दी नहीं समझ सकते । मुगल बादशाहों के इतिवृत्त से परिचित पाठक ही महाराजकुमार के निबन्धो का पूरा आनन्द उठा सकते है ।`[8]

अब हम भावात्मक निबंधों की जो विशेषताएँ हैं उसी के आधारपर डॉ.रघुवीर सिंह लिखित `शेष स्मृतियाँ` पुस्तक में संग्रहीत भावात्मक निबंधों की विशेषताएँ स्पष्ट करेंगे। . . . . ।

१ संक्षिप्त गद्य रचना
२ संघटित और स्वतंत्र रचना
३ व्यक्तित्व का प्रकाशन
४ लेखक - पाठक के बीच सीधा सम्बन्ध
५ प्रभावपूर्ण शैली

संक्षिप्त गद्य रचना

डॉ.रघुवीर सिंह इतिहास के विद्वान और अनुसन्धान कर्ता हैं । गद्य काव्यात्मक रचनाओं में `शेष स्मृतियाँ` गद्य संग्रह रचना अधिक महत्वपूर्ण रही है । इसमें पाँच भावात्मक निबंध हैं|इनके सभी भावात्मक निबंध संक्षिप्त गद्य रचना ही कहलायेगी । इस निबंध का आधार ऐतिहासिकता है । इसमें संकलित निबंध का लक्ष्य `ताजमहल`, `फतहपूर सीकरी` दिल्ली का किला` ,`आगरे का किला` और` तीन कब्रें `हैं । लेखकने इन निबंधों में अकबर के समय से लेकर बहादूरशाह जफर के समय तक के मुगलकालीन अतीत का इतिहास बताया है । मुगलकालीन भव्य भवन और खण्डहर इनके गद्य की रचनाओं के विषय` रहे हैं । आगरा, दिल्ली और लाहौर में मुगल साम्राज्य के वैभव और ऐश्वर्य ने प्रेम और सौन्दर्य के साथ रंगरेलियाँ की हैं । ऐतिहासिक घटनाओं को कल्पना के सहारे एक ओर तो विलासी . . . चित्र खींचे हैं तो दूसरी ओर पतन का अश्रुपात मनुष्य के हृदय को भारी बना देता है । ताजमहल, फतहपूर सीकरी, लाल किला,अनारकली की कब्र आदि पर लेखकने भावुकता का स्रोत बहाया है । मनुष्यता की सी सजीवता पत्थरों में प्रदान करके इतिहास को काव्य रूप दिया है । लेखकने भावुकता . . . अकबर,जहाँगीर और शाहजहाँ के जीवन काल के

मुगल साम्राज्य के उत्थान-पतन और नूरजहाँ, अनारकली और मुमताज महल के रूप सौन्दर्य के मध्यान्ह और सायंकाल पर विचार किया गया है ।

लेखक ने अपनी चतुरायी तथा कौशल्य से इन ऐतिहासिक घटनाओं को बडे कुशलतासे चित्रित करने में सफलता पायी है ।

संघटित और स्वतंत्र रचना --

डॉ. रघुवीर सिंह ने ' शेष ' स्मृतियाँ ' इसमें ऐतिहासिक घटनाओं का तथा मुगलकालिन साम्राज्य के सम्राट और उनका वैभव विलास इनका चित्रण करते समय उन्होंने सभी निबंध के विषय का आधार ऐतिहासिक घटनाएँ, पात्र, भव्य भवनों को लेकर मनुष्य के संवेदनाओं को प्रकट किया है । ' शेष स्मृतियों ' में ' ताज ' से लेकर ' उजडा स्वर्ग ' तक लेखकने मनुष्य की जीवन में होनेवाले उत्थान - पतन का चित्र अंकित किया है । इसमें निबंध की रचना स्वतंत्र ही की है फिर वह शृंखलाबध्द अभिव्यक्ति हुई है, क्योंकि लेखकने सभी निबंध में एक ही आधार पाया है । वह है इतिहास के मार्मिक घटनाओं का स्पष्टीकरण । इतिहास जिस ब्योरों को उचित न समझकर छोड देता है उसे लेखकने अपनी संवेदनपूर्ण लेखनी से सजीवता का रूप देकर मानवीय संवेदना ,सुख ,दु:ख, जीवन का उतार चढाव को चित्रित किया है ।

' शेष स्मृतियों ' में जो घटनाएँ घटी हुई है वह खण्डहर ,तथा भव्य भवनों को लेकर।उन्होंने मनुष्य की सी सजीवता ईंट और पत्थरों में प्रदान की है । ' ताजमहल ' में शाहजहाँ तथा मुमताज के प्रेम कहानी को चित्रित करते समय शाहजहाँ की प्रियेसी के प्रति किया हुआ प्रण ताजमहल के रूप में पूर्ण किया परंतु लेखक कहते है कि ताजमहल पूर्ण होने पर जब शाहजहाँ पहलीबार उसे देखने गया तब उसके हृदय की क्या दशा हुई होगी ? यह इतिहासकारोंने कहीं वर्णन नहीं किया है । ' शेष स्मृतियों ' में अधिकतर भोगपक्ष का वर्णन हुआ है । इसमें अमरत्व की भावना और सुख ऐश्वर्य विलास में डुबे रहने की लालसा सभी स्थान पर चित्रित हुई है । भावुक लेखक की दृष्टि जब फतहपूर सीकरी पर पडी

तब अकबर का टूटा हुआ हृदय तथा उसके स्वप्न की टूटी हुई भग्नावशेष स्मृति दिखायी दी । गंभीर चिंतन से मानवीय जीवन के तथ्य सामने रखकर जब कल्पना मूर्त विधान और हृदय भाव संचार में प्रवृत्त होते हैं तभी मार्मिक प्रभाव उत्पन्न होता है । जिस तरह मनुष्य अपनी प्रिय के बिछडने से दु:खी होता है परंतु उसी के ही दु:ख में लीन नहीं रह सकता । लेखकने शाहजहाँ के माध्यम से स्पष्ट किया है । शाहजहाँ ने महत्व प्रदर्शन और सौन्दर्य दर्शन की कामना को जगाया और उसकी तुष्टि की भीख कला से माँगी । उसे उसके उजडे हुए हृदय के समान दिल्ली उजडी हुई प्रतीत हुई। इसी कारण उन्होंने " शाहजहाँबाद " बनाकर फिर उसे बसाने की नक्शा खींचने लगा । यहाँ शाहजहाँ की मानसिक दशाओं को चित्रित किया है ।

लेखक की दृष्टि जिस तरह मुगलकालीन साम्राज्य के शासकों तथा उनका उत्थान - पतन, ऐश्वर्य - विलास पर पडी है, उसी तरह सामान्य जनता के सुख दु:ख की ओर भी मुडी है । इस निबंधों के पाँचों स्थानों का सम्बन्ध इतिहास प्रसिध्द शासकों से है फिर भी उनके अतीत ऐश्वर्य मद का स्मरण करते समय आपने उन बेबस तथा लाचार को याद किया है जिनका जीवन का सारा रस निचोड कर वह मद का प्याला भरा गया था । दिल्ली का किला भावुक महाराज कुमार को उजडा हुआ स्वर्ग सा दिखायी पडता है । इसमें मुगल साम्राज्य का अंतिम सम्राट बहादूरशाह " जफर " की करुणापूर्ण कथा को चित्रित किया है । बहादूरशाह ने उस किले में रोते रोते जीवन बिताया । बलवाईयों का अंगरेजों के साथ युध्द तथा अपनी साम्राज्य पर परकीय सत्ता को शासन करके देख उसका मृत शरीर विकल हो उठता है । लेखक ने जहाँ मुगलकालीन सम्राट के ऐश्वर्य विलास, आमोद-प्रमोद, सौन्दर्य के रूप का, विशाल शक्तिशाली साम्राज्य के उत्थान का चित्रण किया है वहाँ स्वर्ग की निर्मिती हुई है । और स्वर्ग के सुख में लीन रहने के कारण महाराज कुमार ने पतनकाल के ध्वंसकारी आघातों, विपत्ति के झोंको और प्रलयंकारी प्रवाह के उपरान्त सम्पत्ति के जीर्ण-शीर्ण और जर्जर अवशेषों के बीच मरती हुई कामनाओं, उठती हुई वेदनाओं ,उमडते हुए आँसुओं,

दहकती हुई आहें तथा नैराश्यपूर्ण बेबसी, दीनता और उदासी का एक लोक ही प्रतिभा के बल से खड़ा किया है । जहाँ शाहजहाँ ने स्वर्ग बसाया था वहीं नरक तैयार हुआ स्वर्ग जब उजड़ा है करुण लोक मे परिणत हुआ है ।

डॉ. रघुवीर सिंह जी ने जीवनानुभूति की अभिव्यक्ति, भावोच्छवासमयी अलंकृति, संवादपूर्ण क्रियाशीलता, कथात्मक जिज्ञासा आदि विशेषता को लेकर निबंध में अपने भावना और कल्पना का सहारा लेकर चित्रित करने में सफल हुये हैं ।

व्यक्तित्व का प्रकाशन --

`शेष स्मृतियाँ` इस गद्य काव्य मे संकलित पाँच निबंधों में लेखक के व्यक्तित्व की झलक स्पष्ट दिखायी देती है । डॉ. रघुवीर सिंह एक ऐसा व्यक्तित्व है कि उनके भाव और कल्पना का हृदय और मस्तिष्क से सीधा संबंध आया हुआ दिखायी पडता है । सभी निबंधों में भावनाओं को अधिक महत्व दिया है । आपने कल्पना द्वारा भावों का प्रकाशन किया है । लेखकने कल्पना और हृदय की जो नाजुक भावना है उसे खण्डहर तथा भव्य भवनों के रूप में भावों का स्रोत बहाया है । उनमें मनुष्य की-सी सजीवता प्रदान की है । लेखकने अकबर के समय से लेकर बहादूर बादशाह `जफर` के समय तक के मुगलकालीन इतिहास पर दृष्टिपात किया है । मुगल साम्राज्य के वैभव को एक स्वप्न कहा है । वह स्वप्नलोक था, टूट जानेपर उसी स्मृति ने फिर एक बार साक्षात्कार कर दिया । स्वप्न के स्मृति का कारण है मुगल बादशाहों की महत्वांकाक्षा को मूर्त रूप देनेवाले किसी समय के रत्नों और बहुमूल्य ऐश्वर्य सामग्री से जगमगाते भवनों के खण्डहर । महाराज कुमार लिखते है -- `उन भग्न खण्डहरों में घूमते घूमते दिल में तूफान उठता है, दो आहें निकल पडती हैं, उसासें भर जाती हैं, आँसू ढलक पडते हैं और .... । उफ` इन खण्डहरों में भी जादू भरा है, समय को भुलावा दे कर, अब वे मनुष्य को भुलवा देने का प्रयत्न करते हैं । भग्न स्वप्न लोक के टूटे हुए हृदय के, उजडे स्वर्ग के इन खण्डहरों ने

भी एक नए मानवीय कल्पनालोक की सृष्टि की । हृदय तडपता है, मस्तिष्क पर बेहोशी छा जाती है, स्मृतियों का बवण्डर उठता है, भावों का प्रवाह उमड़ पडता है । विस्मृति की वह मादक मदिरा पीकर ... नहीं समझ पडता है कि किधर वहा जा रहा हूँ । '[९] इन करुण स्मृतियों के मस्ताने दिनों उनके उत्थान-पतन के चित्रों को लेकर कुमार ने एक भूतकाल की सरस झाँकी प्रस्तुत की है । इनमें उनके हृदय की विवशता दिखायी पडती है । जिसे एक बार स्वप्न देखने की सुखपूर्वक विचरने की लत पडती है वह ऐसे प्रलोभन, मस्ती लानेवावाली विस्मृति को इतनी निष्ठूरता से नहीं ठुकरा सकता । इसलिए महाराज कुमार कहते हैं -- ' भौतिक स्वर्ग को स्वप्न में भी उजडते देखा, उसके खण्डहरों का करुणापूर्ण रूदन सुना, उसकी वे मर्माहत आहें सुनी और उनके साथ मैं भी रो पडा ।'[१०]

लेखकने अधिकतर विलास और ऐश्वर्य के चित्र खींचने के लिए भोग-पक्ष का चित्रण करना आवश्यक समझा क्योंकि ऐश्वर्य और विलास में डूबे रहने के कारण पतन होना संभाव्य है । उन्होंने बडे रुचि से विलास के चित्र दिये हैं पर उनकी दृष्टि पतन पर ही रही है । इस प्रकार एक विरोध उपस्थित करके अद्भूत चमत्कार उत्पन्न कर दिया है । पतन का चित्रण करते समय समवेदना का गहरा पुट उनकी अभिव्यक्ति को मार्मिकता दे देता है । 'ताज' के सम्बन्ध वे कहते हैं शाहजहाँ का विस्तृत साम्राज्य जिस तरह काल के एक चपेट में विलिन हो गया वैसे ताजमहल में जडे हुओ वे अमुल्य रत्न कहाँ चले गये । परन्तू आज भी ताजमहल का वह वैभव मनुष्य को भुलावा देकर क्षुब्ध करके रुलाता है और यों मानव जिवन की इस करुण कथा को चिरस्थायी बनाए हुए हैं ।

लेखक ने खण्डहरों और उनके पत्थरों में सजीवता प्रदान की है । जहाँ कहीं उनका हृदय भावावेग से पूर्ण हुआ है उन्होंने प्राचीन वैभव की याद दिलाकर उन पत्थरों को भी रुलाया है तो कभी बावला बना दिया है । आज भी उन सफेद पत्थरों में आवाज आती है ' मैं भूला नहीं हूँ । आज भी प्रतिवर्ष उस सुन्दर सम्राज्ञी के मृत्यु को याद कर न जाने कहाँ से पानी की बूँद आँसू के रूप में टूपक पडती है ।' उन्होंने खण्डहरों के चढाव - उतार की आलोचना की है । उन्होंने

किसी सम्राट के कब्र पर खडे होकर जीवन के नश्वरता की ओर संकेत किया है, विलास वर्णन करते समय मनुष्य की निरन्तर बढती हुई लालसा, संघर्ष में पडे हुओ मनुष्य की स्थिति संसार से अपेक्षित व्यक्ति की करुणा कथ्य का चित्र दिया है। इस तरह सुक्तियाँ और दार्शनिक विचार बोये हुओ हैं। जहाँ निबन्धों में गम्भीरता है दूसरी ओर चिन्तन शक्ति को प्रकट किया है।

महाराज कुमार वैभव और ऐश्वर्य विलास के उत्थान-पतन के चित्र खींचने में लीन नही रहे हैं। उन्होंने उन पीडितों, बेबस और लाचार जनता की ओर भी दृष्टिपात किया है जिनके रक्त-मांस पर साम्राज्य का वैभव खडा किया है। सम्भावना और अनुमान के आधारपर जब वे भावुकतापूर्ण वर्णन करते है तो एक विचित्र करुणा और विषाद की सृष्टि हो जाती है। ऐसा करते समय वे अतीतकालीन रंगरेलियाँ और विलास क्रीडा को मूर्तिमान कर देते है।

आपने अतीत की स्मृतियों को कल्पना के रंग में रंगकर बडे कलात्मक ढंग से अपने निबंधों द्वारा उद्घाटित किया है। आपके निबंधों में आपकी विद्वता एवं कला कुशलता का अपूर्व परिचय मिलता है। आपने मुगल सम्राटों के अतीत जीवन किला के भग्नावशेषों में छिपे भाग्य को उत्थान पतन के दृश्यों को पाठकों के सामने प्रकट किया है।

लेखक - पाठक के बीच सीधा सम्बन्ध --

निबंध में जिस तरह संक्षिप्त गद्य रचना, संघटित और स्वतंत्र रचना, व्यक्तित्व अप्रकाशन महत्त्व का है उसी तरह पाठक और निबंधकार के बीच वार्तालाप होना आवश्यक रहा है। भावात्मक निबंध में निबंधकार अपने भावना को पाठक के सामने प्रकट करता है और पाठक से सीधा सम्बन्ध स्थापित करता है। इसी कारण लेखक और पाठक के बीच तादात्म्यता स्थापित होती है।

डॉ. रघुवीर सिंह ने भावात्मक निबंधों में भारतीय वैभवशाली तथा गौरवपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित भव्य भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

जैसे कि अकबर को स्वप्न आया और विलिन हो गया फिर भी संसार में अपनी अमीट स्मृति छोड गया । कल्पना शक्ति के सहारे मनुष्य उन परित्यक्त खण्डहरों के पुरातन प्राचीन वैभवपूर्ण दिनों की याद कर उनके उस स्मृति संसार की सैर करने को दौड पडता है । `[१२]

जिस तरह उन्होंने विलासिता की सैर की है वैसे ही पतन के उन भग्न खण्डहरों में भी । लेखक कहते हैं -- `आओ । वर्तमान को सामने से हटानेवाली विस्मृति मदिरा का प्याला ढाले और उसे पीकर कुछ काल के लिए इन भग्नावशेषों में घूम घूमकर उस स्वप्नलोक में विचरे । तब कल्पना के उन सुनहले पंखों पर बैठे उड चलेंगे उस लोक में जहाँ स्वयं अकबर विचरता था । `[१३]

लेखकने मनुष्य के साथ - साथ इतिहास भी किस प्रकार अमर बनाना चाहता है यही स्पष्ट किया है । एक जगह पर लेखक कहते हैं -- `यदि आज यह दरवाजा अपने संस्मरण कहने लगे, पत्थरों का यह ढेर बोल उठे, तो भारत के न जाने कितने अज्ञात इतिहास का पता लग जावे और न जाने कितनी ऐतिहासिक त्रुटियाँ ठीक की जा सके । `[१४] अकबर के दीवान खास का वर्णन करते समय लेखक की दृष्टि चौसर पर पडी और उन्हें चौसर खेलना अकबर के मदमाते मस्तिष्क की अनोखी सुझा लगती है।वे कहते हैं -- `जहाँ तक पढा या सुना है, संसार के इतिहास में अकबर के अतिरिक्त किसी ने भी जीवित गोटा का ऐसा चौसर नही खेला । `[१५] यह खेल अकबर की अद्वितिय मनोरंजक की विशेषाता थी । `ताजमहल` इस निबंध का वर्णन करते हुवे लेखक कहते हैं " पाठको । उस सुन्दर मकबरे का वर्णन पार्थिव जिव्हा भी नहीं कर सकती फिर इस बेचारी जड लेखनी का क्या ? रघुवीर सिंह जी अपने भावनाओं को व्यक्त करते हैं मानो पाठक से एक तरफा संवाद ही है । आपने मानवीय जीवन लिला के उत्थान पतन का अच्छा उदाहरण दिया है । लेखक कहते हैं -- `ऊँचाई से खड्ड में गिरनेवाले जलप्रपात को देखने के लिए सैकडों कोसों की दूरी से मनुष्य चले आते हैं । ......
उन उठे हुए कगारों पर टकराकर उस जलराशि का बिखर जाना,खंड खंड होकर फुहारों के स्वरूप में यत्र तत्र बिखर जाना ,हवा में मिल जाना - बस इसी दृश्य

को देखने में मनुष्य को आनन्द आता है ।` [१६]

अतीत के लम्बे-चौडे मैदान के बीच इन उभय पक्षों की घोर विषमता सामने रखकर आप जिस भावधारा में डूबे हैं उसी में औरों को भी डुबाने के लिए भावुक महाराजकुमार ने ये शब्दस्रोत बहाया है ।

प्रभावपूर्ण शैली --

निबंध में मुख्य:तया प्रभाव शैली होना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि निबंध की सफलता लेखक की शैली पर ही आधारित होती है । शैली के बारे में अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार गार्डिनर ने कहा है --` यह बात की निबंधकार के पास कुछ ऐसा कथ्य है जिसे कहना आवश्यक है, उतनी सही नहीं है जितनी यह कि उसे कुछ कहना है, फिर चाहे वह बात कुछ भी क्यों न हो । और आखिर विषय का क्या महत्व है ? कोई भी खूँटी आप का हैट टाँगने के काम आ सकती है । हैट ही बादशाह है ।` [१७]

डॉ. रघुवीर जी हिन्दी साहित्य में भावात्मक निबंध लिखनेवाले एक मात्र लेखक है । उन्होंने ऐतिहासिक मुगलकालीन समय की घटनाओं को अपने निबंध में चित्रित किया है । आपके सभी निबंध भावात्मक है परंतु दार्शनिक विचार बडे स्वाभाविक रूप में आये हैं । लेखकने जीवन के गतिविधियों के चित्र अंकित किये हैं इसमें कवि की भावात्मकता गौण तथा इतिहास तत्व की विचारात्मकता प्रबल हो गयी है । एक उदाहरण देखिये --` दार्शनिक कहते हैं, जीवन एक बुदबुदा है, भ्रमण करती हुई आत्मा के ठहरने की एक धर्मशाला मात्र है । वे यह भी बताते हैं कि इस जीवन का संयोग तथा वियोग क्या है ? एक प्रवाह में संयोग से साथ बहते हुए लकडी के टूकडों के साथ तथा विलग होने की कथा है ।` [१८] डॉ. सिंह जी की भाषा शैली के कारण इनके भावात्मक निबन्ध चिरस्मरणीय रहेंगे । इनकी भाषा में भावानुकूलता, अलंकारों का वैभव सर्वत्र मिलता है । रूपक, मानवीकरण, उत्प्रेक्षा आदि अपने अपने स्थान पर जडे हुओ भाषा को दैदीप्यमान बनाते हैं । अलंकारों से भी अधिक आकर्षक उनकी वर्णन शैली है । चमत्कार, प्रवाह, लय की

कमी नहीं है । विक्षेप शैली का सौन्दर्य अपूर्व है । इनकी भाषा ` शेष स्मृतियाँ ` में भावुकता से विचारशीलता की ओर अग्रसर हुई है । वर्णनों का सौन्दर्य इनकी भाषा का वैभव है ।

आपकी शैली भावात्मक शैली का आदर्श प्रस्तुत करती है । इसमें धारा और तरंग शैली का भव्य रूप मिलता है । जहाँ भाव धारा संयत है, वहाँ धारा शैली और जहाँ हृदय भावातिरेक से उमड़ा है वहाँ तरंग और विक्षेप शैली का भव्य नमूना पाया जाता है । छायावादी,कलात्मकता और अनूठी उपमान-योजना आपके शैली की विशेषताएँ हैं । मधुरता और प्रासादात्मकता से पूर्ण प्रवाहपूर्ण गतिशीलता आपकी रचनाओं की विशेषता है । कथन में भोलापन और स्पष्टता है ।

भाषा शैली के उदाहरण देखिए -- ` एक नजर जो देख लो इस मृत शरीर को,अकबर के भग्न स्वप्न संसार,सुनसान रंगमंच,टूटे फूटे अवशेषों को । अकबर के ऐश्वर्य विलास को उजडे शताब्दियाँ बीत गई, किन्तु कामना कुँज मकबरा आज भी खडा है । सीकरी के भव्य खण्डहर मानवीय इच्छाओं सुख-वासनाओं तथा गौरव की आकांक्षाओं की स्मशान भूमि है । मानवीय करुणा दृश्य देखकर पाषाण भी क्षुब्ध हो जाते हैं । असमय पतन पर टूटे हुए दिलों की आहें भग्न प्रासादों से सन सन करती हुई निकलती हैं । `[१९] इन अवतरणों से लेखक की भाषा शैली के सभी गुण प्रकट हैं । छोटे छोटे वाक्य,अभिधात्मक भाषा,कहीं भावना का आवेग तो कहीं सरल प्रवाह,कहीं क्रिया,कर्म कर्ता का स्थान परिवर्तन इनके शैली के गुण हैं । बात समझाने के लिये समान उदाहरण और उपमाएँ भी देते चलते हैं । शैली शिल्प में सशक्तता कम सरसता अधिक है । भावनाओं में आकुल आवेग की कमी है । विचारों में प्रगति का आभास मिलता है । शैली प्रासाद कहलायेगी । चित्रात्मकता और सांकेतिकता इनके निबंध की विशेषता है ।

निष्कर्ष

डॉ.रघुवीर सिंह ने ` शेष स्मृतियाँ ` में संग्रहीत निबंध रचना अधिक महत्वपूर्ण रही है । इनके निबंध के विषय ऐतिहासिक घटनाओं और भव्य

भवनों का आधार है । आपने ऐतिहासिक पात्र अकबर,शाहजहाँ,बहादुरशाह जफर के जीवन - लिला के ऊपर चढाव का तथा अनारकली ,मुमताज इनके रूप सौन्दर्य और साम्राज्य के वैभव का चित्रण किया है । ईंट और पत्थरों में मनुष्य की सी सजीवता प्रदान करके अश्रुपात किया है । आपने कहीं कहीं इतिहास के ब्यौरों को पाठकों पर छोड दिया है स्पष्टता से चित्रण नहीं किया । निबंध में कहीं कहीं गूढ संकेत किया हुआ प्रतीत हुआ है । अतीत काल को अपनी रंगीन भाषा से, गतिशील कल्पना से, अद्भुत चित्रण कौशल से जीता जागता रूप दे दिया है । चिन्तन की गहरायी से कुमारजी नये नये भावरत्न को निकाल लेते हैं । सम्भावना द्वारा कल्पना जगत् में विचरन करना उनकी विशेषता है । `वे पत्थरों की आवाज सुनकर आहें भरते हैं । ` `पत्थरों पर की गई कारीगरी के वर्णन का वे अनुभव करते हैं । सजग और संवेदनशील व्यक्तित्व घटनाओं, व्यक्तियों, वस्तुओं का चित्रण में जितना सरल और आत्मीयता दिखायी देती है उसी तरह उनमें गंभीरता और कलात्मकता भी दिखायी देती है ।

महाराजकुमार सिंह इतिहासज्ञ हैं अतएव भावुकतावश इतिहास को कहीं नष्ट नहीं होने दिया । मानसिक दशाओं का चित्रण और उमडते भावों की अनूठी योजना इस पुस्तक की विशेषता है । लेखकने भावात्मक निबंध में लक्षणा का सहारा लेकर उनमें नया बल,नयी लचक,नया रंग उपस्थित किया है । इसकी शैली विषयानुकूल और प्रभावशाली बन गयी है । ऐतिहासिक वृत्ति के सहारे भावों की मालायें गूंथी हुई हैं । सचमुच राजकुमार वर्णन शैली के आचार्य माने जाते हैं । ` डॉ. रघुवीर सिंह के निबंधों का काव्यात्मक ऊहापोह तथा चित्रात्मक सौन्दर्य उनकी विशेषता रही है ।

संदर्भ :

	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
१	डॉ.रघुवीर सिंह	शेष स्मृतियाँ	१३६
२	-वही	वही	६७
३	- वही -	वही	९४
४	- वही -	वही	१०२
५	- वही -	वही	११९
६	- वही -	वही	१५३
७	- वही -	वही	९३
८	- वही -	वही	३०
९	- वही -	वही	५१
१०	- वही -	वही	५४
११	- वही -	वही	७०
१२	- वही -	वही	७७
१३	- वही -	वही	८२
१४	- वही -	वही	८३
१५	- वही -	वही	८९
१६	- वही -	वही	१२४
१७	शम्भुनाथ सिंह और वासुदेव सिंह	निबंध और हिन्दी निबंध	२४
१८	डॉ.रघुवीर सिंह	शेष स्मृतियाँ	६४
१९	- वही -	- वही -	९४